दिनांक **02-11-2018**

प्रेस विज्ञप्ति

किंग जॉर्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय के सर्जरी (जनरल) विभाग द्वारा सफलतापूर्वक पहला दूरबीन पद्धति से Whipple's operation किया गया। यह ऑपरेशन गोरखपुर निवासी 45 वर्षीय दुर्गा प्रसाद का किया गया। वह पीलिया एंव शरीर में खुजली से परेशान थे। इससे पूर्व मरीज ने गोरखपुर में ही अपना इलाज कराया था, परन्तु मरीज को उस इलाज से आराम नहीं मिला। जिसके बाद स्थानीय सर्जन द्वारा इस मरीज को कैंसर की सम्भावना के कारण के0जी0एम0यू0 भेज दिया गया। शुरूआती जांच में मरीज को कैंसर की सम्भावना लगी परन्तु मरीज भर्ती होकर इलाज कराने में असहमत था। इस कारण मरीज का ओ0पी0डी0 माध्यम में जांच की गई।

जांच के दौरान मरीज को Obstructive Jaundice With Duodenal Carcinoma होने का पता चला। इस बीमारी का इलाज शल्य चिकित्सा (Pancreatico duodenectomy or whipple's operation) करके किया जाता है। सामान्यतः यह पेट के ऊपरी भाग 20–25 सेंटीमीटर का बड़ा चीरा लगाकर किया जाता है, यह काफी जटिल ऑपरेशन माना जाता है। इस कारण दूरबीन पद्धति से यह ऑपरेशन चुनौतीपूर्ण होता है।

जनरल सर्जरी विभाग द्वारा पहला Laproscopic whipple's operation किया गया। इस ऑपरेशन के अगले दिन ही मरीज चलने लगा तथा तीसरे दिन से पानी भी पीने लगा था। चीरा लगाकर (Open whipple's operation) में मरीज को काफी बड़ा चीरा लगता है। जिस कारण उसे काफी दर्द होता है तथा चलने–फिरने में उसे काफी दिक्कत होती है। और बाद में हर्निया होने की सम्भावना बनी रहती है। ऑपरेशन टीम में शामिल प्रोफेसर डॉ0 अवनीश कुमार ने बताया कि इस विधि मे सामान्यतः 5–6 छोटे चीरे लगाए जाते है। जिसमें 10–12 एम0एम0 के तीन और 5 एम0एम0 के तीन चीरे लगते हैं। इस ऑपरेशन में कैंसर युक्त डयूडेनम (छोटी आंत) का पार्ट तथा उसमें लगा हुआ पैनक्रियाज (अग्नाशय) एवं पित्त की थैली एवं नली को स्टेपलर की सहायता से निकाल दिया जाता है तथा दूरबीन विधि द्वारा ही छोटी आंत को अग्नाशय, पित्त की नली एवं अमाशय से जोड़ दिया जाता है। सम्भवतः पहले ऑपरेशन के कारण इस ऑपरेशन में 10–12 घण्टे लगे।

यह ऑपरेशन प्रोफेसर (डॉ0) एच0एस0 पाहवा के मार्गदर्शन में प्रोफेसर (डॉ0) अवनीश कुमार एवं टीम ने किया। इस सफल ऑपरेशन को करने वाली टीम में प्रोफेसर (डॉ0) अवनीश कुमार का साथ डॉ0 मनीष कुमार अग्रवाल, डॉ0 अक्षय आनन्द, डॉ0 संदीप वर्मा, डॉ0 अजय पाल शामिल रहे। यह ऑपरेशन सर्जरी जनरल– के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ0 ए0ए0सोनकर के दिशा निर्देश एवं उच्च कोटि के उपकरण मुहैया कराने के कारण संभव हो पाया। ऑपरेशन में डॉ0 अभिषेक, डॉ0 अंकित, डॉ0 प्रसून, डॉ0 धीरेन्द्र, डॉ0 अनुराग, डॉ0 कलीम, डॉ0 नियतांक शामिल थे। ऑपरेशन में निश्चेतना प्रोफेसर रजनी कपूर, डॉ0 प्रेम राज सिंह, डॉ0 सौरभ सिंह, डॉ0 अपूर्णा, डॉ0 प्रज्ञा ने दिया। इस ऑपरेशन में काफी लम्बा समय लगता है, जिस कारण निश्चेतना का मुख्य योगदान रहता है तथा इसके बिना यह ऑपरेशन संभव नहीं था।

इस ऑपरेशन में परिचारिका, सिस्टर सुरभि वर्मा, ममता देवी, ओ0टी0 टेक्नीशियन श्री रूपेश सिंह, श्री फैजान हैदर, श्री महेन्द्र सैनी, श्री सुनील सोनकर एवं श्री आशीष कुमार का योगदान रहा। यह ऑपरेशन चिकित्सा विश्वविद्यालय के मा0 कुलपति प्रोफेसर एम0एल0बी0 भटट् के द्वारा डाक्टरों के प्रोत्साहन एवं विभाग के निरन्तर उन्नयन के कारण संभव हो पाया। यह ऑपरेशन दिनांक 22 अक्टूबर 2018 को किया

गया। मरीज अभी पूर्णतः स्वस्थ्य है तथा मरीज की छुटटी संभवतः दिनांक 03 नवंबर 2018 को कर दी जाएगी। ऑपरेशन में मरीज का लगभग पचास हजार रूपए खर्च हुए। दिल्ली में प्राइवेट अस्पताल में इस ऑपरेशन का खर्च लगभग 6–8 लाख रूपए तक हो जाता। परन्तु उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा चलाए जा रहे जनहित के विभिन्न कार्यक्रम के कारण इस ऑपरेशन का खर्च लगभग पचास हजार रूपए संभव हो पाया।